10

प्रक्षिप्य दैत्यान् लवणाम्बुराशो । वायव्यमस्त्रं शर्धि पुनस्ते महोरगः श्वभामिव प्रविष्टम् ॥ ९८॥

राजा। तेन ह्युपश्चिषय रथं यावदाराहामि।

5 सूत: | रथमुपश्चेषयति । राजा नाटग्रेन रथमारूट: | उर्वशी राजानं विकेशिय सानि:शासं सह सख्या निष्कान्ता चित्ररथंश्व |

राजा। वर्षशीमार्गीन्मुखः। भहो नु खलु दुर्लभाभिनिवशी मदनः।

एषा मनो मे प्रसमं शरीरात् पितः पदं मध्यममुत्पतन्ती। सुराङ्गना कर्षति खण्डिताग्रात् सूत्रं मृणालादिव राजहंसी॥ १९॥

[इति निष्कान्ताः सर्वे |

विक्रमोर्वशीये नाटके प्रथमोङ्गः समाप्तः ॥

1. G. °राशे:.

3. B. महोरगश्व . P. भुजंगम:.

- 4. B N.N₂. रथमुपइक्ठेषय. G.B.A. भारोहयामि.
- 5. B.A.N.N2. तथात रथम. A.N.N2. भारोहति, and P. भांभरोहति, for भा- रूड:.A.N.N2. om. रथम. U. जपन- यति for जपश्चेषयति. U.राजा नाटग्रे- नारूड:. A.N.N2.P. भवलीकयन्ती, and B. विलोकयन्ती, for विलोक्य.
- 6. A. सखीभ्याम्, N.N2. सखीभि: G. नि:क्रान्ता. K. after सनि:श्रासम् goes on: अवि णाम पुणीवि
 एणं उवथारिणं पोल्खिस्सं इति सखीभिः

सह प्रस्थिता। राजा। उर्वशीगमनो &c. -G.K. om. चित्ररथश after नि-कान्ता. B. चित्ररथ: सर्वी अध्सरसश्च.

- 7. G.K. उर्वशोगमनानमुख: P. adds भूत्वा after १मुखो.—B.P. om. नु खलु.—U.B. दुर्लभाभिलाषा मे मनोर-थ:, K. दु भदन:, P. अहो दुर्लभाभिनवेशी मनोरथ:.—A.N. N2.U. insert: तथा हि after मदन:.
- 12. G. नि:क्रान्ता:. Let it be observed once for all that G. and U. always read नि:क्रान्त and never निष्कान्त throughout the play.